श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

प्रश्नोत्तरमुक्तावली ।

प्रश्नः-किंस्विदादित्यमुन्नयति के च तस्याभितश्चराः । कश्चैनमस्तं नयति कस्मिंश्च प्रतितिष्ठति ॥ १ ॥

अर्थ-(प्रश्न) सूर्यको उदयकर्त्ता कौन है १ और सूर्यके आसपास चारों ओर चलनेवाले कौन हैं २ तथा सूर्यको अस्तकर्त्ता कौन है ३ और सूर्य किसमें स्थित होता है ४ ॥ १ ॥

उत्तरम्-ब्रह्मादित्यमुन्नयति देवास्तस्याभितश्चराः । धर्मश्चास्तं नयत्येनं सत्ये च प्रतितिष्ठति ॥ २ ॥

अर्थ-(उत्तर) ब्राह्मणोंका देवत्व स्वाध्याय (वेदादि शास्त्रका पढना पढाना) है ९ और ब्राह्मणोंमें सज्जनोंका ऐसा धर्म तप है १० तथा इन ब्राह्मणोंका मनुष्यभाव मरना है ११ और देवता ब्राह्मणादिकी निन्दा करना ही इनमें दुष्ट भाव है १२ ॥ ६ ॥

प्रश्नः-किं क्षत्रियाणां देवत्वं कश्च धर्मः
सतामिव । कश्चैषां मानुषो भावः
किमेषामसतामिव ॥ ७ ॥

अर्थ-(प्रश्न) क्षत्रियोंका देवभाव क्या है १३ और क्षत्रियोंमें सज्जनोंका ऐसा धर्म क्या है १४ तथा इन क्षत्रियोंमें मनुष्यभाव क्या है १५ और इन क्षत्रियोंमें दुष्टभाव क्या है १६ ॥ ७ ॥

उत्तरम्-इष्वस्त्रमेषां देवत्वं यज्ञ एषां

सतामिव। भयं वै मानुषो भावः परि-
त्यागोऽसतामिव ॥ ८ ॥

अर्थ-(उत्तर) क्षत्रियोंका देवभाव धनुः-शास्त्र विद्या जानना है १३ और क्षत्रियोंमें सज्जनोंका धर्म यज्ञ करना है १४ तथा इन क्षत्रियोंमें भय करना मनुष्यत्व है १५ और इन क्षत्रियोंमें पीडित शरणागतको रक्षा न करके त्याग करना दुष्टभाव है ॥ १६ ॥ ८ ॥

प्रश्नः-किमेकं यज्ञियं साम किमेकं य-
ज्ञियं यजुः। का चैषा वृणुते यज्ञं कां
यज्ञो नातिवर्तते ॥ ९ ॥

अर्थ-(प्रश्न) ज्ञानयज्ञ सम्बन्धी सामवेद क्या है १७ और ज्ञानयज्ञ सम्बन्धी यजुर्वेद क्या है १८ तथा इस ज्ञानयज्ञको कौन आच्छादन

करता है १९ और यह ज्ञानयज्ञ किसको उल्लंघन नहीं करता है २० ॥ ९ ॥

उत्तरम्-प्राणो वै यज्ञियं साम मनो वै यज्ञियं यजुः । ऋगेका वृणुते यज्ञं तां यज्ञो नातिवर्त्तते ॥ १० ॥

अर्थ-(उत्तर) ज्ञानयज्ञ सम्बन्धी सामवेद प्राणायाम है १७ और ज्ञानयज्ञ सम्बन्धी यजुर्वेद मनका एकाग्र करना है १८ तथा इस ज्ञानयज्ञको ऋग्वेदादि शास्त्रोंकी वाणी ही उपदेशरूप होकर आच्छादन करती है १९ और यह ज्ञानयज्ञ उस वाणीको नहीं उल्लंघित करता है २० ॥ १० ॥

प्रश्नः-किंस्विदावपतां श्रेष्ठो किंस्विन्निवपतां वरम् । किंस्वित्प्रतिष्ठमानानां किंस्वित्प्रसवतांवरम् ॥ ११ ॥

अर्थ-(प्रश्न) बोनेवालोंको क्या श्रेष्ठ है २१ और बोनेमें क्या श्रेष्ठ है २२ तथा प्रतिष्ठित होनेवालोंमें कौन श्रेष्ठ है २३ और उत्पन्न होनेवालोंमें क्या श्रेष्ठ है २४ ॥ ११ ॥

उत्तरम्-वर्षामावपतां श्रेष्ठं बीजं निवपतां वरम् । गावः प्रतिष्ठमानानां पुत्रः प्रसवतां वरम् ॥ १२ ॥

अर्थ-(उत्तर) बोनेवालोंको वर्षा श्रेष्ठ है २१ और बोनेमें बीज श्रेष्ठ है २२ तथा प्रतिष्ठा पानेवालोंमें गौवें श्रेष्ठ हैं २३ और उत्पन्न होनेवालोंमें पुत्र श्रेष्ठ है २४ ॥ १२ ॥

प्रश्नः-इन्द्रियार्थाननुभवन् बुद्धिमान् लोकपूजितः। संमतः सर्वभूतानामुच्छ्वसन्को न जीवति ॥ १३ ॥

अर्थ-(प्रश्न) इन्द्रियोंके रूप रस गंध स्पर्श शब्द आदि विषयोंको जानता हुआ, बुद्धिमान् और लोकमें सन्मानकोभी प्राप्त तथा सब जीवोंके समान और श्वास प्रश्वास लेता हुआ भी ऐसा कौन है जो जीता नहीं है अर्थात् मृतकके समान है २८ ॥ १३ ॥

उत्तरम्-देवतातिथिभृत्यानां पितॄणा-
मात्मनश्च यः । न निर्वपति पञ्चाना-
मुच्छ्वसन्न स जीवति ॥ १४ ॥

अर्थ-(उत्तर) देवता, अतिथि, भृत्य (सेवक वर्ग) पितर और आत्मा (निज शरीर) इन पांचोंको जो यथायोग्य पदार्थोंसे सत्कार आदि नहीं करता है सो ऐसा मनुष्य श्वासके लेते हुए भी नहीं जीता है अर्थात् मृतकके समान है २९ ॥ १४ ॥

प्रश्नः-किंस्विद्गुरुतरं भूमेः किंस्वि-
दुच्चतरं च खात्। किंस्विच्छीघ्रतरं
वायोः किंस्विद्बहुतरं तृणात् ॥१५॥

अर्थ-(प्रश्न) पृथ्वीसे गुरुतर अत्यन्त श्रेष्ठ गौरवयुक्त कौन है २६ और आकाशसे उच्चतर अत्यन्त बड़ा श्रेष्ठ कौन है २७ तथा वायुसे भी शीघ्रतर अत्यन्त वेगवान् कौन है २८ और तृण से भी बहुतर अधिक समूहयुक्त क्या है२९॥१५॥

उत्तरम्-माता गुरुतरा भूमेः खात्पितो-
च्चतरस्तथा। मनः शीघ्रतरं वाता-
च्चिन्ता बहुतरी तृणात् ॥ १६ ॥

अर्थ-(उत्तर) पृथ्वीसे गुरुतरा अत्यन्त श्रेष्ठ गौरवयुक्त माता है २६ और आकाशसेभी उच्चतर अत्यन्त बड़ा श्रेष्ठ पिता है २७ तथा वायुसे

भी शीघ्रतर वेगयुक्त मन है २८ और तृणसे भी अधिक बहुतर चिन्ताका समूह है ॥२९॥१६॥

प्रश्नः-किंस्वित्सुप्तं न निमिषति किंस्विज्जातं न चोपति। कस्यस्विद्धृदयं नास्ति किंस्विद्वेगेन वर्द्धते ॥ १७॥

अर्थ-(प्रश्न) सोता हुआ कौन आंख नहीं मिचता है ३० और उत्पन्न होके स्वयं कौन नहीं चलता है ३१ तथा किसके हृदय नहीं है ३२और वेगसे कौन वृद्धिको प्राप्त होता है ॥३३॥१७॥

उत्तरम्-मत्स्यः सुप्तो न निमिषत्यण्डं जातं न चोपति। अश्मनो हृदयं नास्ति नदी वेगेन वर्द्धते ॥ १८ ॥

अर्थ-(उत्तर) सोते हुए मत्स्य (मच्छली) आंख नहीं मीचती है३०और उत्पन्न होके अण्डा

स्वयं नहीं चलताहै ३१ तथा पत्थरके हृदय नहीं है ३२ और नदी वेगसे बढती है ॥ ३३ ॥ १८॥

प्रश्नः-किंस्वित्प्रवसतो मित्रं किंस्विन्मित्रं गृहे सतः। आतुरस्य च किं मित्रं किंस्विन्मित्रं मरिष्यतः ॥ १९ ॥

अर्थ--(प्रश्न) परदेशीका मित्र कौन है ३४ और घरमें मित्र कौन है ३५ तथा रोगीका मित्र कौन है ३६ और आसन्न मरणवालेका मित्र कौन है ॥ ३७ ॥ १९ ॥

उत्तरम्-सार्थः प्रवसतो मित्रं भार्या मित्रं गृहे सतः। आतुरस्य भिषङ्मित्रं दानं मित्रं मरिष्यतः ॥२०॥

अर्थ--(उत्तर) परदेशीका मित्र साथियोंका समूह है ३४ और घरमें अपनी स्त्री मित्र है ३५

तथा रोगीका मित्र वैद्य है ३६ और शीघ्र मरने-
वालेका दान देना ही मित्र (सुखदायक)
है ३७ ॥ २० ॥

प्रश्नः-कोऽतिथिः सर्वभूतानां कः स्वि-
द्धर्मः सनातनः । अमृतं किंस्विद्रा-
जेन्द्र किंस्वित्सर्वमिदं जगत् ॥ २१ ॥

अर्थ--(प्रश्न)सर्व प्राणसमूहका अतिथि कौन
है ३८ और सनातन धर्म क्या है ३९ तथा हे
राजन् ! अमृत (मोक्षप्राप्ति) का हेतु क्या है४०
और सर्व जगत्का आधार मुख्य कौन है४१।२१

उत्तरम्-अतिथिः सर्वभूतानामग्निः सो-
मोगवामृतम् । सनातनोऽमृतो धर्मो
वायुः सर्वमिदं जगत् ॥ २२ ॥

अर्थ-(उत्तर) सब जीवोंका अतिथि अग्नि
है ३८ और गौके अमृत समान दुग्ध घृतादिसे

होम यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करना सनातन धर्म है ३९ तथा अमृत (मोक्षप्राप्ति) का हेतु धर्म है ४० और सर्वजगत्का जीवन आधार रूप मुख्य वायु है ४१ ॥ २२ ॥

प्रश्नः--किंस्विदेको विचरते जातः को जायते पुनः । किंस्विद्धिमस्य भेषज्यं किंस्विदावपनं महत् ॥ २३ ॥

अर्थ-(प्रश्न) अकेला कौन घूमता है ४२ और उत्पन्न होकर पुनः कौन उत्पन्न होताहै ४३ तथा शीतकी औषध क्या है ४४ और बोनेके लिये बडा श्रेष्ठस्थान क्या है ४५ ॥ २३ ॥

उत्तरम्-सूर्य एको विचरते चन्द्रमा जायते पुनः । अग्निर्हिमस्य भेषज्यं भूमिरावपनं महत् ॥ २४ ॥

अर्थ--(उत्तर) अकेला सूर्य घूमता है ४२ और चन्द्रमा बारम्बार उत्पन्न होता है ४३ तथा शीत-की औषधि अग्नि है ४४ और बोनेके लिये श्रेष्ठ बडा स्थान पृथिवी है ४५ ॥ २४ ॥

प्रश्नः--किंस्विदेकपदं धर्म्यं किंस्विदेक-
पदं यशः । किंस्विदेकपदं स्वर्ग्यं
किंस्विदेकपदं सुखम् ॥ २५ ॥

अर्थ--(प्रश्न) धर्मका श्रेष्ठ एकपद क्या है ४६ और यशका श्रेष्ठ एकपद क्या है ४७ तथा स्वर्ग प्राप्तिका श्रेष्ठ एकपद क्या है ४८ और सुख देनेवाला एक पद क्या है ४९ ॥ २५ ॥

उत्तरम्--दाक्ष्यमेकपदं धर्म्यं दानमेक-
पदं यशः । सत्यमेकपदं स्वर्ग्यं शील-
मेकपदं सुखम् ॥ २६ ॥

अर्थ-(उत्तर) धर्मका श्रेष्ठ एकपद ब्रह्मज्ञान है ४६ और यशका श्रेष्ठ एकपद (स्थान) दान देना है ४७ तथा स्वर्गप्राप्तिका श्रेष्ठ एकपद सच्चा आचरण है ४८ और सुख देनेवाला एकदम शील श्रेष्ठ स्वभाव है ४९ ॥ २६ ॥

प्रश्नः-किंस्विदात्मा मनुष्यस्य किंस्वि-
द्दैवकृतः सखा। उपजीवनं किंस्वि-
दस्य किंस्विदस्य परायणम् ॥ २७ ॥

अर्थ-(प्रश्न) मनुष्यका आत्मा क्या है ५० और पुरुषका दैवकृत मित्र कौन है ५१ तथा इस मनुष्यादिका उपजीवन क्या है ५२ और मनुष्यका परायण क्या है ५३ ॥ २७ ॥

उत्तरम्-पुत्र आत्मा मनुष्यस्य भार्या
दैवकृतः सखा। उपजीवनं च पर्जन्यो
दानमस्य परायणम् ॥ २८ ॥

अर्थ-(उत्तर) मनुष्यका आत्मा पुत्र है ५० और पुरुषका देवकृत मित्र स्वस्त्री है ५१ तथा इस मनुष्यादिका उपजीवन मेघ है ५२ और मनुष्यके परायण श्रेष्ठ दान देना है ५३ ॥ २८ ॥

प्रश्नः-धन्यानामुत्तमं किंस्विद्धनानां स्यात्किमुत्तमम् । लाभानामुत्तमं किंस्वित्सुखानां स्यात्किमुत्तमम् ॥ २९ ॥

अर्थ-(प्रश्न) धन्य जनोंमें उत्तम क्या वस्तु है ५४ और धनोंमें श्रेष्ठ धन क्या है ५५ तथा लाभोंमें उत्तम लाभ क्या है ५६ और सुखोंमें उत्तम सुख क्या है ५७ ॥ २९ ॥

उत्तरम्--धन्यानामुत्तमं दाक्ष्यं धनानामुत्तमं श्रुतम् । लाभानां श्रेय आरोग्यं सुखानां तुष्टिरुत्तमा ॥ ३० ॥

अर्थ-(उत्तर) धन्य जनमें उत्तम वस्तु निपुणता है ५४ और धनोंमें श्रेष्ठ धन विद्या वेदादि शास्त्र पढना है ५५ तथा लाभोंमें श्रेष्ठ लाभ आरोग्यता है ५६ और सुखोंमें उत्तम सुख तृष्णाका नाश और सन्तोष है ५७ ॥ ३० ॥

प्रश्नः-कश्च धर्मः परो लोके यश्च धर्मः सदाफलः। किं नियम्य न शोचन्ति कैश्च सन्धिर्न जायते ॥ ३१ ॥

अर्थ-(प्रश्न) इस लोकमें सबसे श्रेष्ठ धर्म क्या है५८और कौन धर्म सदा उत्तम सुखादि फल देनेवाला है ५९ तथा किसको नियममें (जीत) करके शोच नहीं करना होता है ६० और किनके साथ करी हुई सन्धि (मेल) नहीं नाश होती है ६१ ॥ ३१ ॥

उत्तरम्-आनृशंस्यं परो धर्मस्त्रयीधर्मः सदाफलः । मनो यस्य न शोचन्ति सद्भिः सन्धिर्न जीर्यते ॥ ३२ ॥

अर्थ-(उत्तर) आनृशंस्य अर्थात् दयालु होकर सब जीवोंको अभय देना (अहिंसा वैर-त्याग किसीको दुःख न देना न मारना) यही सबसे श्रेष्ठ धर्म है ५८ और वेदोक्त धर्म सदा सुखादि श्रेष्ठ फलको देनेवाला है ५९ तथा मनको जीत कुमार्गसे हटाय ईश्वरादि श्रेष्ठ विषयमें लगाकर शोच करना नहीं पड़ता है ६० और सज्जनोंके साथ करी भई मित्रता बहुधा विनाश नहीं होती है ६१ ॥ ३२ ॥

प्रश्नः-किंनु हित्वा प्रियो भवति किंनु हित्वा न शोचति । किंनु हित्वाऽर्थवान् भवति किंनु हित्वा सुखी भवेत् ॥३३॥

अर्थ-(प्रश्न) मनुष्य किसको त्यागकर सब को प्रिय होता है ६२ और किसको त्यागकर शोच नहीं करताहै ६३ तथा किसको त्यागकर धनी होता है ६४ और किसको त्यागकर सुखी होता है ॥ ६५ ॥ ३३ ॥

उत्तरम्-मानं हित्वा प्रियो भवति क्रोधं हित्वा न शोचति। कामं हित्वाऽर्थवान् भवति लोभं हित्वा सुखी भवेत् ॥३४॥

अर्थ-(उत्तर) मनुष्य अभिमान त्यागकर सबको प्रिय होता है ६२ और क्रोधका त्यागकर शोच नहीं करता है ६३तथा काम अत्यन्त अभिलाषा (तृष्णा)का त्यागकर धनी होता है ६४ और लोभका त्यागकर सुखी होता है ६५ ॥ ३४ ॥

प्रश्नः-किमर्थं ब्राह्मणे दानं किमर्थं नट-

नर्त्तके। किमर्थं चैव भृत्येषु किमर्थं चैव राजसु॥ ३५॥

अर्थ-(प्रश्न) ब्राह्मणोंको धनादि पदार्थोंका दान किसलिये दिया जाताहै ६६ और नट नर्त्तक आदिको किसलिये धनादि देते हैं ६७ तथा भृत्यों (सेवाकरनेवालों) को किसवास्ते धनादि दिया जाता है ६८ और राजाको किस लिये धन देते हैं ६९॥ ३५॥

उत्तरम्-धर्माय ब्राह्मणे दानं यशोऽर्थं नटनर्त्तके॥ भृत्येषु भरणार्थं वै भयार्थं चैव राजसु॥ ३६॥

अर्थ-(उत्तर) ब्राह्मणोंको धनादि दान धर्मके लिये दिया जाताहै ६६ और नट नर्त्तकादिकोंको यशके लिये धन आदि देते हैं ६७ तथा सेवकों-

को पालनके लिये धन दिया जाता है ६८ और राजाको भयके कारण धन देते हैं ६९ ॥ ३६ ॥

प्रश्नः—केनस्विदावृतो लोकः केनस्विन्न प्रकाशते। केन त्यजति मित्राणि केन स्वर्गं न गच्छति ॥ ३७ ॥

अर्थ—(प्रश्न) यह लोक किससे आच्छादित है ७० और किससे प्रकाशित नहीं होता है ७१ तथा किस कारणसे मित्रोंको त्याग करता है ७२ और किसके होनेसे स्वर्गादि श्रेष्ठ सुखको नहीं प्राप्त होता है ७३ ॥ ३७ ॥

उत्तरम्—अज्ञानेनावृतो लोकस्तमसा न प्रकाशते। लोभात्त्यजति मित्राणि सङ्गात्स्वर्गं न गच्छति ॥ ३८ ॥

अर्थ—(उत्तर) यह लोक अज्ञानसे आच्छादित है ७० और उसही अज्ञानरूप अन्धकारसे

प्रकाशित नहीं होताहै ७१ तथा लोभ होनेके कारणसे मित्रोंका त्याग करताहै ७२ और दुष्ट विषयोंमें आसक्ति होनेसे स्वर्गसुखको नहीं प्राप्त होता है ॥ ७३ ॥ ३८ ॥

प्रश्नः-मृतः कथं स्यात्पुरुषः कथं राष्ट्रं
मृतं भवेत् । श्राद्धं मृतं कथं वा
स्यात्कथं यज्ञो मृतो भवेत् ॥ ३९ ॥

अर्थ-(प्रश्न) मृतकके समान जीता पुरुष कैसे होताहै ७४ और राज्यदेश मृतकके समान कैसे होताहै ७५ तथा श्राद्ध मृतक कैसे होता है ७६ और यज्ञ मृतक कैसे होते हैं ७७ ॥ ३९ ॥

उत्तरम्-मृतो दरिद्रः पुरुषो मृतं राष्ट्रम-
राजकम् ॥ मृतमश्रोत्रियं श्राद्धं मृतो
यज्ञस्त्वदक्षिणः ॥ ४० ॥

अर्थ-(उत्तर)दारिद्री (धनहीन) पुरुष मृतकके समानहै७४और राजाके विना देश मृतकके समान होता है७५तथा श्रोत्रिय अर्थात् वेदादि शास्त्रके जाननेवाले विद्वानके विना श्राद्ध मृतक होताहै७६ और दक्षिणा रहित यज्ञ मृतक होताहै ७७॥४०॥

प्रश्नः-का दिक्किमुदकं प्रोक्तं किमन्नं किं च वै विषम्। श्राद्धस्य कालमाख्याहि ततः पिब वदस्व च ॥ ४१ ॥

अर्थ-(प्रश्न) [उपदिशन्तीति] दिक् उपदेशकरने योग्य कौन है ७८ और जगत्का जलादि आधार क्या है७९और जगत्को अन्नादि भोजन देनेवाला कौन है ८० और विषके समान क्या है ८१ तथा श्राद्धका समय कहिये तब जल पीजियेगा ८२ ॥ ४१ ॥

उत्तरम्–सन्तो दिग्गलमाकाशं गौरन्नं
प्रार्थना विषम्। श्राद्धस्य ब्राह्मणः
कालः कथं वा यक्ष मन्यसे ॥ ४२ ॥

अर्थ–(उत्तर) सज्जन मनुष्यही उपदेश करने योग्य होते हैं ७८ और जलादि सब जगद्का आधार आकाश है ७९ तथा जगत्को शुद्ध अन्नादि भोजन देनेवाली गौ है ८० और मांगना दूसरेसे याचना करना विषके समान है ८१ और श्राद्धका समय उत्तम ब्राह्मण है ८२ हे यक्ष! आप कैसा मानते हो? ॥ ४२ ॥

प्रश्नः–तपः किं लक्षणं प्रोक्तं को दमश्च
प्रकीर्तितः। क्षमा च का परा प्रोक्ता
का च ह्रीः परिकीर्त्तिता ॥ ४३ ॥

अर्थ–(प्रश्न) तपका लक्षण क्या है ८३ और दम किसको कहते हैं ८४ तथा श्रेष्ठ क्षमा

किसको कहते ८५ और लज्जा कौन कही जाती है ८६ ॥ ४३ ॥

उत्तरम्–तपः स्वधर्मवर्त्तित्वं मनसो दमनं दमः ॥ क्षमा द्वंद्वसहिष्णुत्वं ह्रीरकार्यान्निवर्त्तनम् ॥ ४४ ॥

अर्थ–(उत्तर) अपने धर्ममें सदा श्रेष्ठतासे वर्त्तते रहना तपका लक्षण है ८३ और मनके जीतनेको दम कहते हैं ८४ तथा शीत, उष्ण, क्षुधा, पिपासा आदि द्वंद्वका सह लेना (अत्यंत व्याकुल न होजाना) क्षमा है ८५ और अकार्य दुष्ट पापादि कर्म निवृत्त होनेका नाम लज्जा है ८६ ॥ ४४ ॥

प्रश्नः–किं ज्ञानं प्रोच्यते राजन् कः शमश्च प्रकीर्तितः ॥ दया च का परा प्रोक्ता किं चार्जवमुदाहृतम् ॥ ४५ ॥

अर्थ-(प्रश्न) हे राजन्! ज्ञान किसको कहते हैं ८७ और शम कौन कहाताहै ८८ तथा श्रेष्ठ दया क्या है ८९ और आर्जव किसको कहते हैं ९० ॥ ४५ ॥

उत्तरम्-ज्ञानं तत्त्वार्थसम्बोधः शम-श्चित्तप्रशान्तता । दया सर्वसुखैषित्व-मार्जवं समचित्तता ॥ ४६ ॥

अर्थ-(उत्तर) तत्त्व अर्थको अच्छी प्रकार जानलेना ज्ञान कहाता है ८७ ॥ और चित्तका तृष्णादिसे निवृत्त होकर शान्त होना शम है ८८ तथा सब जीवोंको सुखकी इच्छा करना दया है ८९ और अपने तथा पराये जीवको तुल्य देखना आर्जव है ९० ॥ ४६ ॥

प्रश्नः-कः शत्रुर्दुर्जयः पुंसां कश्च व्याधि-

रनन्तकः। कीदृशश्च स्मृतः साधुर-
साधुः कीदृशः स्मृतः ॥ ४७ ॥

अर्थ-(प्रश्न) दुर्जय (दुःख और कठिनतासे जीतनेके योग्य) शत्रु कौन है १ और अनन्त व्याधि कौन है२ तथा साधु श्रेष्ठ सज्जन कौन है ३ और असाधु दुष्ट दुर्जन कैसा होता है ॥ ४ ॥ ४७ ॥

उत्तरम्-क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुर्लोभो
व्याधिरनन्तकः। सर्वभूतहितः साधु-
रसाधुर्निर्दयः स्मृतः ॥ ४८ ॥

अर्थ-(उत्तर) क्रोधरूप शत्रु दुर्जय है १ और लोभ यह अनन्त व्याधि है २ तथा सब जीवोंके कल्याण चाहने और करनेवालेको साधु कहते हैं ३ और निर्दयी (दयारहित) मनुष्य दुष्ट होता है ॥ ४ ॥ ४८ ॥

प्रश्नः--को मोहः प्रोच्यते राजन् कश्च मानः प्रकीर्तितः॥ किमालस्यं च विज्ञेयं कश्च शोकः प्रकीर्तितः ॥४९॥

अर्थ-(प्रश्न)मोह किसको कहते हैं १५ और मान किसको कहते हैं १६ तथा आलस्य किसको जानना चाहिये १७ और शोक क्या है ॥ १८ ॥ ४९ ॥

उत्तरम्-मोहो हि धर्ममूढत्वं मानस्त्वात्माभिमानिता॥ धर्मवैमुख्यमालस्यं शोकस्त्वज्ञानमुच्यते ॥ ५० ॥

अर्थ-(उत्तर) धर्ममें मूढताको मोह कहते हैं १५ और आत्माका शरीरमें अभिमान करना मान कहाता है १६ तथा धर्माचरण न करनेको आलस्य कहते हैं १७ और अज्ञान ही शोक है ॥ १८ ॥ ५० ॥

प्रश्नः—किं स्थैर्य्यमृषिभिः प्रोक्तं किं च धैर्य्यमुदाहृतम् । स्नानं च किं परं प्रोक्तं दानं च किमिहोच्यते ॥ ५१ ॥

अर्थ--(प्रश्न) ऋषि मुनि लोग स्थिरता किसको कहते हैं ९९ और धैर्य किसको कहते हैं १०० तथा श्रेष्ठ स्नान क्या कहाता है १०१ और दान श्रेष्ठ क्या है १०२ ॥ ३१ ॥

उत्तरम्—स्वधर्मे स्थिरता स्थैर्यं धैर्य्यमिन्द्रियनिग्रहः । स्नानं मनोमलत्यागो दानं वै भूतरक्षणम् ॥ ५२ ॥

अर्थ--(उत्तर) स्वधर्ममें स्थिर होनेको स्थिरता कहते हैं ९९ और इन्द्रियोंको जीतके वशमें रखना धैर्य कहाता है १०० तथा मनके मल राग द्वेष असत्यादिका त्याग करना श्रेष्ठ स्नान कहाता है १०१ और जीवोंकी रक्षा अहिंसा अर्थात् किसी

जीवको क्लेश न देना और न मारना यही श्रेष्ठ दान है १०२ ॥ ५२ ॥

प्रश्नः—कः पंडितः पुमान् ज्ञेयो नास्तिकश्च क उच्यते।को मूर्खः कश्च कामः स्यात्को मत्सर इति स्मृतः ॥ ५३ ॥

अर्थ--(प्रश्न) किस पुरुषोंको पण्डित कहते हैं १०३ और नास्तिक तथा मूर्ख किसको कहते हैं १०४ और काम किसको कहते हैं १०५ और मत्सर क्या कहाता है १०६ ॥ ५३ ॥

उत्तरम्--धर्मज्ञः पण्डितो ज्ञेयो नास्तिको मूर्ख उच्यते। कामः संसारहेतुश्च हृत्तापो मत्सरः स्मृतः ॥ ५४ ॥

अर्थ--(उत्तर) धर्म्मका जानने वाला और आचरण करनेवाला पुरुष पंडित कहाताहै १०३ और ईश्वर तथा परलोकादिको न माननेवालेको

मूर्ख और नास्तिक कहते हैं १०४ संसारमें उत्पत्तिके हेतुको काम कहते हैं १०५ और दूसरेके सुख ऐश्वर्यादिको देखके हृदयमें सन्ताप होनेको मत्सर कहते हैं १०६ ॥ ५४ ॥

प्रश्नः--कोऽहंकार इति प्रोक्तः कश्च
दम्भः प्रकीर्त्तितः । किं तद्दैवं परं प्रोक्तं
किं तत्पैशुन्यमुच्यते ॥ ५५ ॥

अर्थ--(प्रश्न) अहंकार किसको कहते हैं १०७ और दम्भ किसको कहते हैं १०८ तथा श्रेष्ठ दैव (भाग्य) किसको कहते हैं १०९ और पिशुनता किसको कहते हैं ११० ॥ ५५ ॥

उत्तरम्-महाज्ञानमहंकारो दम्भो धर्म-
ध्वजोच्छ्रयः । दैवं दानफलं प्रोक्तं
पैशुन्यं परदूषणम् ॥ ५६ ॥

अर्थ--(उत्तरम्) महा अज्ञानको अहंकार कहते हैं १०७ और दूसरोंको दिखानेके लिये बड़ा धर्मध्वज बनना दम्भ कहाता है १०८ तथा पूर्वमें किये हुए दान आदि पुण्य कर्मोंके फलको श्रेष्ठ भाग्य कहते हैं १०९ और दूसरोंमें दोषारोपण करनेको पिशुनता कहते हैं ११० ॥५६ ॥

प्रश्नः--धर्मश्चार्थश्च कामश्च परस्पर-
विरोधिनः । एषां नित्यविरुद्धानां
कथमेकत्र संगमः ॥ ५७ ॥

अर्थ--(प्रश्न) परस्पर विरुद्ध धर्म अर्थ और काम इनका एकत्र संगम मिलकर एक जगह रहना कैसे होता है १११ ॥ ५७ ॥

उत्तरम्--यदा धर्मश्च भार्या च परस्पर-
वशानुगौ । तदा धर्मार्थकामानां
त्रयाणामपि संगमः ॥ ५८ ॥

अर्थ-(उत्तर) जब धर्म और स्त्री ये दोनों परस्पर अविरुद्ध होकर अपने वशमें रहके चलें तब धर्म अर्थ और काम इन तीनोंका संगम एकत्र होताहै १११ ॥ ५८ ॥

प्रश्नः- अक्षयो नरकः केन प्राप्यते भरतर्षभ । एतन्मे पृच्छतः प्रश्नं शीघ्रं त्वं वक्तुमर्हसि ॥ ५९ ॥

अर्थ-(प्रश्न) हे भरतके वंशमें श्रेष्ठ राजन्! अक्षय नरक (महाघोर दुःख) को कौन प्राप्त होता है इस प्रश्नका उत्तर शीघ्र ही आप कहनेके योग्य हैं ॥ ११२ ॥ ५९ ॥

उत्तरम्-ब्राह्मणं स्वयमाहूय याचमानमकिंचनम् । पश्चान्नास्तीति यो ब्रूयात्सोऽक्षयं नरकं व्रजेत् ॥ ६० ॥

अर्थ-(उत्तर) याचना करनेवाले दीन भिक्षुक

ब्राह्मणको जो अपनाहीसे बुलायके और देना कहकर पुनः अपमान करके कहे कि, हमारे पास कुछ देनेको नहीं है सो अक्षय नरकादि घोर दुःखको प्राप्त होता है ११२ ॥ ६० ॥

प्रश्नः–राजन् कुलेन वृत्तेन स्वाध्यायेन श्रुतेन वा। ब्राह्मण्यं केन भवति प्रब्रूह्येतत्सुनिश्चितम् ॥ ६१ ॥

अर्थ–(प्रश्न) हे राजन् ! श्रेष्ठ कुलमें जन्म और श्रेष्ठ स्मधर्माचरण तथा स्वाध्याय अर्थात् वेदादि शास्त्रका पढना पढाना अथवा सुनना इन सब कर्मोंमें किससे ब्राह्मणत्व होता है सो निश्चय करके कहिये ११३ ॥ ६१ ॥

उत्तरम्–शृणु यक्ष कुलं तात न स्वाध्यायो न च श्रुतम्। कारणं हि द्विजत्वे च वृत्तमेव न संशयः ॥ ६२ ॥

अर्थ-(उत्तर) हे यक्ष ! हे तात!सुनिये श्रेष्ठ कुलमें जन्म और स्वाध्याय वेदादि शास्त्रका पढना पढाना और सुनना ये कोई द्विजत्वके कारण नहीं हैं किन्तु श्रेष्ठतासे स्वधर्मका आचरण करना ही द्विजत्व अर्थात् ब्राह्मण भावके कारण हैं इसमें संशय नहीं है ॥ ६२ ॥

वृत्तं यत्नेन संरक्ष्यं ब्राह्मणेन विशेषतः । अक्षीणवृत्तो न क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ॥ ६३ ॥

अर्थ-इससे अपने धर्म और श्रेष्ठ आचरणकी यत्नसे रक्षा करनी सबको योग्य है और ब्राह्मणोंको विशेष धर्मकी रक्षा करनी चाहिये क्योंकि जो धर्म युक्त है वही श्रेष्ठ है और जो स्वधर्माचरण रहित है वही ब्राह्मणत्वसे रहित है ॥६३॥

पठकाः पाठकाश्चैव ये चान्ये शास्त्र-

चिन्तकाः। सर्वे व्यसनिनो मूर्खा यः क्रियावान् स पण्डितः॥ ६४॥

अर्थ–पढनेवाले और पढानेवाले तथा और भी शास्त्रकी चिंतना करनेवाले ये सब, श्रेष्ठ धर्माचरण रहित होंय तो व्यसनी और मूर्ख हैं, किंतु जो क्रियावान् है सो पण्डित (ब्राह्मण)है ॥६४॥

चतुर्वेदोपि दुर्वृत्तः स शूद्रादतिरिच्यते। योऽग्निहोत्रपरो दान्तः स ब्राह्मण इति स्मृतः॥ ६५॥

अर्थ–चारों वेदोंको भी पढा होय परंतु दुष्ट आचरण पापादि कर्म करता होय तो यह शूद्रसेभी अतिनीच है किन्तु जो अग्निहोत्रादि श्रेष्ठ कर्म करता है और इन्द्रियजीत है सो ब्राह्मण है॥ ११३॥ ६५॥

प्रश्नः–प्रियवचनवादी किं लभते विमृ-

शितकार्यकरः किं लभते। बहुमित्रकरः किं लभते धर्मे रतः किं लभते कथय ॥ ६६ ॥

अर्थ-(प्रश्न) प्रियवचन बोलनेवाले मनुष्यको क्या लाभ है ११४ और विचार करके कार्य करनेवालेको क्या लाभ है ११५ तथा बहुत मित्र करनेवालेको क्या लाभ है ११६ और श्रेष्ठ धर्ममें युक्त पुरुषको क्या लाभ है ११७ ॥६६॥

उत्तरम्-प्रियवचनवादी प्रियो भवति विमृशितकार्यकरोऽधिकं जयति। बहुमित्रकरः सुखं वसते यश्च धर्मरतः स गतिं लभते ॥ ६७ ॥

अर्थ-(उत्तर) प्रियवचन बोलनेवाला सबको प्रिय होताहै ११४ और विचार करके कार्य करनेवाला बहुधा जयको प्राप्त होता है अर्थात्

कार्यको सिद्ध करता है ११५ तथा बहुत मित्र करनेवाला सुखसे वसता है ११६ और श्रेष्ठ स्वधर्माचरण करनेवाला श्रेष्ठ गति स्वर्गादि सुखको प्राप्त होता है ११७ ॥ ६७ ॥

प्रश्नः--को मोदते किमाश्चर्यं कः पंथाः काच वार्तिका। इति मे चतुरः प्रश्नान्पूरयित्वा जलं पिब ॥ ६८ ॥

अर्थ-(प्रश्न) आनन्दको प्राप्त कौन होता है ११८ और आश्चर्य क्या है ११९ तथा श्रेष्ठमार्ग कौन है १२० और वार्त्ता क्या है १२१ इन चारों प्रश्नोंको पूर्ण करके तब जल पीजिये ॥ ६८ ॥

उत्तरम्--दिवसस्याष्टमे भागे शाकं पचति यद्गृहे। अनृणी चाप्रवासी च स वारिचर मोदते ॥ ६९ ॥

अर्थ-(उत्तर) दिनके आठवें भागमें भी जो अपने घरमें शाक पकायकर भोजन करता है परंतु अनृणी अर्थात् ऋणसे रहित और अप्रवासी (परदेशमें नहीं) है सो हे जलचर यक्ष आनन्दको प्राप्त होता है ११८ ॥ ६९ ॥

उत्तरम्--अहन्यहनि भूतानि गच्छन्तीह यमालयम् । शेषाजीवितुमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम् ॥ ७० ॥

अर्थ-(उत्तर) इस संसारमें नित्यप्रति प्राणियोंके समूह मृत्युको प्राप्त होते हैं परन्तु जो कि शेष रहते हैं वे सदा जीवित रहनेकी इच्छा करते हैं और संसारमें वैराग्ययुक्त होकर परमेश्वरमें दृढ प्रेम नहीं करते हैं जो जन्म मरणसे

मुक्तिको प्राप्त होवें इससे परे और क्या आश्चर्य-है ११९ ॥ ७० ॥

उत्तरम्--वेदाः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणं नैको मुनिर्यस्य वचः प्रमाणम्। धर्म-स्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्थाः ॥ ७१ ॥

अर्थ-(उत्तर) सम्पूर्ण वेद प्रमाण हैं और स्मृति वाक्य प्रमाण हैं और एक मुनि नहीं कि जिसके वाक्यका प्रमाण होय किन्तु अनेक ऋषि मुनियोंके वाक्य भी प्रमाण हैं और धर्म्मका तत्त्व यथार्थ ज्ञानरूप प्रभाव हृदयमें स्थित है सो महात्मा श्रेष्ठ सज्जन पुरुष जिस मार्गसे गये हों वही मार्ग श्रेष्ठ है १२० ॥ ७१ ॥

उत्तरम्--अस्मिन्महामोहमये कटाहे

सूर्याग्निना रात्रिदिवेन्धनेन । दैवस्य दर्वी परिघट्टनेन भूतानि कालः पचतीति वार्त्ता ॥ ७२ ॥

अर्थ-(उत्तर) इस महामोहमय संसाररूप-कडाहमें सूर्यरूप अग्नि और रात्रि दिनरूप-इन्धन करके और दैव (भाग्य)की दर्वी(करछुली) के परिघट्टन (चारों ओर चलानेसे) कालरूप पाककर्त्ता सर्व प्राणियोंको पकाता है अर्थात् वारंवार जन्म मरण प्राप्त होता है यही संसारमें वार्त्ता है ॥ १२१ ॥ ७२ ॥

प्रश्नः-व्याख्याता मे त्वया प्रश्ना याथा-तथ्यं परंतप । इदानीं पुनराख्याहि तं यः सर्वधनी नरः ॥ ७३ ॥

अर्थ-(प्रश्न) हे राजन् ! आपने मेरे प्रश्नोंके उत्तर यथायोग्य कहे परन्तु अब यह कहिये कि सबमें श्रेष्ठ धनी पुरुष कौन है ॥ ७३ ॥

उत्तरम्-दिवं स्पृशति भूमिं च शब्दः पुण्येन कर्मणा। यावत्स शब्दो भवति तावत्पुरुष उच्यते ॥ ७४ ॥

अर्थ-(उत्तर) जिसके पुण्यकर्म्मसे उत्पन्न सुयश आकाश और पृथ्वीमें व्याप्त होता है ऐसा पुण्यवान् यशस्वी पुरुष उत्तम कहाता है ॥७४॥

तुल्ये प्रियाऽप्रिये यस्य सुखदुःखे तथैव च। अतीतानागते चोभे सैव सर्वधनी नरः ॥ ७५ ॥

अर्थ-(उत्तर) तथा प्रिय अप्रिय सुख दुःख भूत और भविष्य ये जिसको समान हैं वह सबमें अत्यंत श्रेष्ठ ज्ञानी पुरुष उत्तम धनी कहाताहै ॥ १२२ ॥ ७९ ॥

इति श्रीकानपूरप्रदेशांतरे स्थानगौरीलखाग्राम-
निवासिवाजपेयिबलदेवप्रसादात्मजसरयूप्र-
सादशर्मकृतभाषाटीकासहिता प्रश्नो-
त्तरमुक्तावली समाप्ता ॥ शुभा ॥

विक्रय्यपुस्तकानि (नीतिग्रंथाः)



नाम.	की. रु. आ.
शुक्रनीति-भाषाटीकासहित जिसमें राजा राजपत्नी और राजकुमारोंके मुख्य धर्मकी रीति और प्रजापालनादि सेनारचना तथा राजप्रबन्ध उत्तम प्रकारसे है ग्लेज ...	२-८
तथा रफ. ...	२-०
चाणक्यनीति-भाषाटीका दोहासहित-इसके देखनेसे मनुष्य नीतिकी उत्तम २ बातें जान सकते हैं	०-८
विदुरनीति-श्रीमहाराज धृतराष्ट्रको विदुरने उपदेश दिया है यक्ष प्रश्नोंके सहित।	०-४
विदुरप्रजागर-भाषा-(छंदबद्ध) कविता देखनेही योग्य है ...	०-६
राजनीति पंचोपाख्यान-भाषामें विष्णुशर्माके पंचतंत्रका भाषान्तर	०-१२